भारतीय वन सेवा के अधिकारिओं के लिए एक सप्ताह का अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

"औषधीय पौधों का सरंक्षण एवं विकास तथा स्थानीय समुदायों के साथ लाभ सांझा करना"

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला 10.9.2018 से 14.9.2018

भारतीय वन सेवा के अधिकारिओं के लिए एक सप्ताह का अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम **"औषधीय पौधों का सरंक्षण एवं विकास तथा स्थानीय समुदायों के साथ लाभ सांझा करना"** पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन हि०व०अ०सं० , शिमला में 10.9.2018 से 14.9.2018 तक किया गया | इसमें 13 राज्यों के भारतीय वन सेवा के विभिन्न स्तरों के 24 अधिकारिओं (सह-प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल , मुख्य वन अरण्यपाल, वन मण्डल अधिकारियों) ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया | इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन 10.09.18 को किया गया | डा० संदीप शर्मा, प्रशिक्षण समन्वयक द्वारा संक्षिप्त परिचय सत्र करवाने के उपरांत प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किया गया |

डा० वी० पी० तिवारी, निदेशक, हि० व० अ० सं० ने उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार, भा० व० से० प्रधान मुख्य अरण्यपाल, वन बल प्रमुख , हिमाचल प्रदेश का हिमाचली टोपी व मफलर से अभिनंदन किया | देश के विभिन्न भागों से आए भा० व० से० अधिकारिओं का स्वागत करते हुए उन्होंने विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर व हि० प्र० में विद्यमान अपार औषधीय पौध संपदा पर प्रकाश डाला | उन्होंने औषधीय पौधों के प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली में महत्व, औषधीय पौधों के सरंक्षण के खतरे और

विशेषताओं की विस्तृत जानकारी देते हुए इनके सतत उपयोग पर बल दिया | उन्होंने बताया प्रशिक्षण कार्यक्रम का उददेश्य औषधीय पादप क्षेत्र में विकसित नई खोजों और प्रौद्योगिकियों के प्रति भा० व० से० के अधिकारिओं को जागरूक करना है |

डा० संदीप शर्मा वैज्ञानिक - जी , प्रशिक्षण समन्वयक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला | उन्होंने पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की दैनिक समय सारणी की जानकारी देते हुए बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विश्वविद्यालयों , संस्थानो, एन०जी०ओ० और औषधीय उद्योग क्षेत्र मे काम कर रहे अनुभवी व्यक्तियों द्वारा विभिन्न विषयों पर जानकारी दी जाएगी । प्रशिक्षण कार्यक्रम में तीसरा और चौथा दिन विशेष रूप से क्षेत्रीय भ्रमण के लिए रखा गया है । तीसरे दिन के कार्यक्रम मे कुफरी, शिलारू नर्सरी, उच्च पर्वतीय चरागाह का भ्रमण व स्थानीय समुदायों के स्थानीय वैद्यों के साथ बातचीत को शामिल किया गया है |चौथे दिन के कार्यक्रम में पश्चिमी हिमालय समशीतोष्ण वृक्ष वाटिका, जहाँ अष्टवर्ग समूह के पौधों को लगाया गया है , व शिमला शहर का भ्रमण किया जाएगा |

डा० राजेश शर्मा , प्रभाग प्रमुख, अनुवांशिकी और वृक्ष सुधार ने संस्थान की पिछले कुछ वर्षों की उपलब्धियों पर प्रस्तुतीकरण दिया | हि० व० अ० सं० द्वारा जम्मू-कश्मीर व हिमाचल में स्थापित विभिन्न क्षेत्रीय शोध केन्द्रों और संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा औषधीय पौधों के क्षेत्र में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को बताया और साथ ही संस्थान द्वारा विकसित औषधीय पौधों की नर्सरी तकनीक की भी जानकारी दी |

.

मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार, भा० व० से०, प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख, ने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि वैदिक काल से ही विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए औषधीय पौधों का उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों कि खेती में उज्ज्वल भविष्य है क्योंकि अच्छे से स्थापित उद्योग ग्रामीण लोगों कि अर्थव्यवस्था में सुधार ला सकते है । उन्होंने आगे कहा कि सौंदर्य प्रसाधन उद्योग भी बहुत से उत्पादों को बनाने में औषधीय और सुगंधित पौधों का उपयोग करते है जो देश के सकल घरेलू उत्पाद में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । उन्होंने इंगित किया कि उद्योगों में औषधीय और सुगन्धित पौधों की बढ़ी हुई मांग तथा कृषि द्वारा बहुत कम उत्पादन के कारण इनका प्राकृतिक क्षेत्रों से अत्यधिक दोहन किया जा रहा है जिसके फलस्वरूप आज की स्थिति में इसकी विशेष देखभाल और सरंक्षण प्रयासों की आवश्यकता है । उद्योगों में औषधीय पौधों कि बढती हुई मांग को पूरा करने के लिए और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाब कम करने लिए औषधीय पौधों कि वाणिज्यिक खेती की अत्यधिक आवश्यकता है।

हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में बात करते हुए उन्होंने यह बताया कि राज्य में औषधीय पौधों की समृद्ध सम्पदा है जिसे सम्पूर्ण देश में अपनी गुणवत्ता के लिए जाना जाता है | उन्होंने कहा कि राज्य के औषधीय पौधे मुख्यतः वन भूमि में पाए जाते है इसलिए वन अधिकारियों को इनकी पहचान, स्थिति और औषधीय गुणों की जानकारी होना आवश्यक है जिससे औषधीय पौधों की सम्पदा को भविष्य के लिए सरंक्षित किया जा सक ता है | उन्होंने आशा व्यक्त की यह प्रशिक्षण कार्यक्रम नि श्चित रूप से अधिकारियों के ज्ञान को बढ़ाएगा और अंत में समाज को लाभान्वित करेगा |

श्री एस.पी.नेगी , भा० व० से०, वन अरण्यपाल ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि को प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में अपना मूल्यवान समय देने के लिए धन्यवाद प्रस्तुत किया | श्री नेगी ने प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कर्मियों का कार्यक्रम में आने के लिए धन्यवाद किया |

पांच दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न शोध संगठनो, संस्थानो, एन०जी०ओ० और उद्योगों से आये विशेषज्ञों द्वारा औषधीय पौधों कि पहचान, अन्वेषण, एकत्रण, सरंक्षण पर व्याख्यान दिए गए | प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल विभिन्न विषय है: महत्वपूर्ण हिमालयन औषधीय पौधों का एकत्रण व रखरखाव (जिसमें की उच्च मूल्यवान जीवन शक्ति बढ़ाने वाले लुप्तप्राय अष्टवर्ग पौधे शामिल है) - चुनौतियों और अवसर; कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की सतत कटाई और प्रसंस्करण; महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की नर्सरी तकनीक, ग्रामीण आय में वृद्धि लाने के लिए औषधीय पौधों का अंतर-फसलीकरण; सोवा-रिग्पा तिब्बती औषधीय प्रणाली का परिचय ; औषधीय पौधों का सरंक्षण और प्रबंधन-एक अवलोकन ; उतर पश्चिम हिमालय के औषधीय पौ धे-स्थानीय समुदायों द्वारा पारम्परिक उपयोग; आजीविका विकल्प के लिए परंपरागत खेती में विविधता ; महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती और विपणन समस्या ; औषधीय और सुगन्धित पौधों के क्षेत्र में चुनौतिया-कच्चे माल की उपलब्धत्ता, पुनः क्रय प्रबंधन , प्रसंस्करण और उपयोग ; दवा की खोज और हिमाल यन औषधियों पौधों में विकास; थार मरुस्थल के कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पौधे उनके उपयोग और कृषि के तरीके ; जड़ी-बूटी संबधी उद्योग के लिए कोशिका और टिशू-कल्चर तकनीक से तैयार लुप्तप्राय औषधीय पौधों से औषधियों का उत्पादन; औषधीय पौधों में कीटों से बीमारी और उनका प्रबन्धन; हिमाचल प्रदेश के लुप्तप्राय औषधीय पौधों का संरक्षण- नीति, क़ानूनी मुद्दे और औषधीय पौधों के क्षेत्र में काम करते समुदायों के अनुभव को सांझा करना |

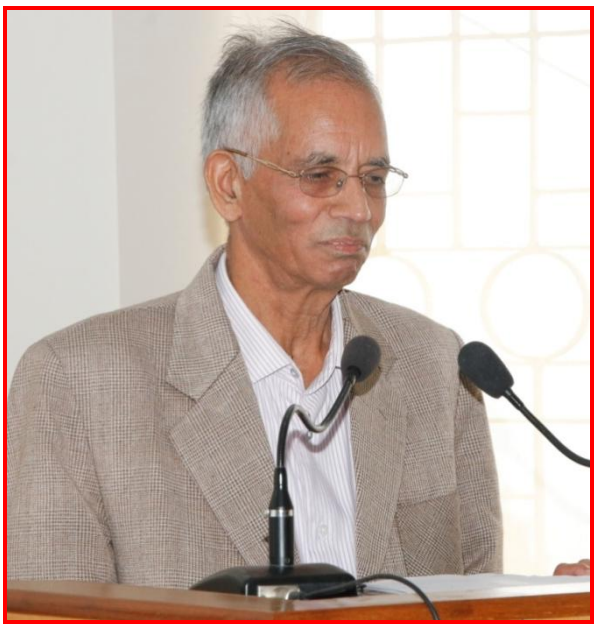

डा. बी. डी. शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, सेवानिवृत)

डा ए. के. पांडे, वैज्ञानिक-जी, व०अ० स० देहारादून

डॉ प्रेम्पा ट्सेरींग, तिबेतन डॉक्टर, शिमला (सेवानिवृत) (हि.प्र॰)

डॉ जी. एस. गोराया, आइ.एफ.एस. , पी.सी.सी.एफ.

डॉ. रंजना आर्या वैज्ञानिक- जी , ए.एफ.आर.आइ., जोधपुर

डॉ. आर एस मिनहास , निदेशक, हीमोड, रामपुर (हि.प्र॰)

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को कुफरी और हि॰ व॰ अ॰ सं॰ शिलारू नर्सरी का भ्रमण करवाया गया जहाँ स्थानीय वैद्यों ने प्रतिभागियों को मानव व घरेलू पशु रोगों में औषधीय पौधों के उपयोग एवं औषधीय पौधों की पहचान के बारे में भी बताया| प्रतिभागियों को अल्पाइन पाश्चर हाटू भी ले जाया गया व रास्ते में विभिन्न वनस्पतियों की जानकारी दी गई | प्रतिभागियों को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान व पश्चिम हिमालय शीतोष्ण वृक्षवाटिका भी ले जाया गया | इस वृक्ष वाटिका का प्रबंधन हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा किया जाता है |

क्षेत्र भ्रमण

समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री जितेंद्र शर्मा, भा० व० से०, प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख (पंजाब) थे | इस सत्र के दौरान " वन विभाग के कामकाज में सुधार - प्रशिक्षण और कौशल में सुधार के माध्यम से भविष्य में विकास की आवश्यकता " पर सामूहिक चर्चा की गई | प्रतिभागियों ने खुले रूप में बातचीत की और देश में औषधीय पौधे के क्षेत्र में विकास के लिए अपनी मूल्यवान प्रतिक्रियाऐ दी | मुख्य अतिथि श्री जितेन्द्र शर्मा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रकृति में हर पौधे का पारिस्थितिक तन्त्र में अपना विशेष महत्व है | उन्होंने कहा कि पौधे अपने जीवन मे न केवल भोजन प्रदान करते है बल्कि पारिस्थितिक चक्र को भी बनाये रखते है जिससे संतुलन बना रहता है | उन्होंने यह भी बताया कि सौंदर्य प्रसाधन और आयुर्वेदिक् उद्योग की बढती मांग के कारण देश में औषधीय पौधे संकटग्रस्त है और इस चुनौती से निपटने के लिए हमारी सोच को विस्तृत करने की आवश्यकता है| उन्होंने इन विषयों से निपटने के लिए नई संभावनाओ की खोज करने व इन प्राकृतिक संसाधनों को सरंक्षित करने के लिए सर्वोतम संभव तरीको को सुझाने का सुझाव दिया | उन्होंने आशा व्यक्त की कि देश भर से आने वाले अधिकारियों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभ हुआ होगा और वो समाज को भी अपने कार्यों से लाभान्वित करवाएंगे |प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने बताया कि कार्यक्रम काफी दिलचस्प व जानकारी पूर्ण था, साथ ही आयोजन के लिए उन्होने आयोजकों का भी धन्यवाद किया |

डा० संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी, और प्रशिक्षण समन्वयक ने औपचारिक रूप से प्र शिक्षण कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया | उन्होंने विशेष रूप से मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार और श्री जितेंद्र शर्मा को उद्घाटन और समापन सत्र के दौरान उपस्थित होने के निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद दिया और साथ में उन्होंने विभिन्न राज्यों से आए हुए भा० व० से० अधिका रियों को इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को सफल बनाने और पूरे दिल से भाग लेने के लिए भी धन्यवाद दिया |

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

TERAKCHI K MARAK
SANJAY KUMAR CHAUHAN
SHALABH KUMAR

R SENTHIL KUMARAN

प्रैस विज्ञप्ति

वन अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से देश के विभिन्न राज्यों के वरिष्ठ वन अधिकारियों के लिए औषधीय पौधों का संरक्षण एवं विकास और इससे होने वाले लाभ को स्थानीय समुदायों के साथ साझा करना विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में देश के 13 राज्यों के लगभग 25 वरिष्ठ वन अधिकारी भाग ले रहे हैं। औषधीय पौधों के क्षेत्र में कार्य कर रहे वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा औषधीय पौधों का वनों में संरक्षण, औषधीय पौधों को पौधशाला तैयार करना, क्षेत्र में पौधरोपण, क्रय विक्रय तथा औषधीय पौधों की खेती से स्थानीय समुदाय तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी आदि विषयों पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी अतिथि अजय कुमार, प्रधान मुख्य अरण्यपाल, हिमाचल प्रदेश द्वारा किया गया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक, डॉ. वीपी तिवारी ने देश के भिन्न.भिन्न प्रदेशों से आऐ भारतीय वन सेवा के अधिकारियों का अभिनंदन तथा स्वागत किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में अवगत करवाते हुए कार्यक्रम संयोजक, डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने बताया कि औषधीय पौधों के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त विषय.विशेषज्ञ, जिनमें वरिष्ठ वैज्ञानिक, अधिकारी, आयुर्वेदिक उद्योगों से संबंधित उद्यमी, वैद्य इत्यादि शामिल है प्रशिक्षणार्थियों से अपने अनुभव सांझा करते हुए इस विषय में उनका का मार्गदर्शन करेंगे तथा क्षेत्र भ्रमण के दौरान हाटू उच्च पर्वतीय चारागाह तथा उसके आस.पास पाए जाने वाली हिमालयी जड़ी बूटियों के बारे में अवगत करवाया जाएगा।

Aapka Faisla

औषधीय फसलों से स्वास्थ्य व किसानों को भी होगा लाभ

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआई) में सोमवार से देशभर विभिन्न राज्यों में सेवाएं दे रहे भारतीय वन सेवा के 25 वरिष्ठ अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हो गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पीसीसीएफ अजय कुमार ने किया। केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सौजन्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्हें औषधीय पौधों का संरक्षण, विकास और इससे होने वाले लाभ को स्थानीय समुदायों के साथ साझा करना विषय पर प्रशिक्षण दिया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पीसीसीएफ अजय कुमार ने कहा कि भारत में औषधीय पौधों की जानकारी चिकित्सा के क्षेत्र में वैदिक काल से ही परंपरागत रूप से चली आ रही है। औषधीय फसलों का उपयोग विभिन्न बीमारियों के इलाज में होता है, साथ ही इनकी खेती से किसानों द्वारा आर्थिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता है।

Amar Ujala

ट्रेनिंग प्रोग्राम | पूरा गांव करेगा खेती तभी मिलेगा लाभ, एचएफआरआई में पांच दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ पर वैज्ञानिकों का खुलासा

मार्केटिंग के बिना औषधीय पौधों की खेती नहीं होगी सफल

पांच दिन तक होगी औषधीय पौधों के संरक्षण पर चर्चा

सिटी रिपोर्टर| शिमला

मार्केटिंग के बिना प्रदेश में औषधीय पौधों की खेती संभव नहीं है। यदि किसान औषधीय पौधे उगा भी देते हैं तो उनके सामने उन्हें बाजार में बेचना चुनौती है। ऐसे में औषधीय पौधों को लगाने से पहले उन्हें बेचने के लिए उनके पास कोई खरीदार हो। यह बात एनबीपीजीआर फागली के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बीडी शर्मा ने एचएफआरआई शिमला में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर कही। उन्होंने कहा कि इसमें जरूरी है कि या तो पूरा गांव मिलकर मेडिशनल प्लांट की खेती करें, ताकि उन्हें बेचने के लिए मार्केटिंग का अधिक खर्चा न हो। प्रशिक्षण का विषय, औषधीय पौधों का संरक्षण एवं विकास और इससे होने वाले लाभ को स्थानीय समुदायों के साथ साझा करना, है। इसमें वैज्ञानिक औषधीय पौधों पर अपने-अपने विचार रखेंगे।

13 राज्यों के 25 वरिष्ठ अधिकारी ले रहे भाग

निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि इस प्रशिक्षण में देश के 13 राज्यों के लगभग 25 वरिष्ठ वन अधिकारी भाग ले रहे हैं। औषधीय पौधों के क्षेत्र में कार्य कर रहे वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा औषधीय पौधों का वनों में संरक्षण, औषधीय पौधों को पौधशाला तैयार करना, क्षेत्र में पौधरोपण, क्रय-विक्रय तथा औषधीय पौधों की खेती से स्थानीय समुदाय तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी आदि विषयों पर प्रस्तुतिकरण के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी अधिकारियों से अनुभव सांझा किया जाएगा।

उसे केंद्र सरकार को भेजा जाएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधान मुख्य अरण्यपाल अजय कुमार ने किया। उन्होंने प्रशिक्षण शिविर के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम संयोजक, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान क्षेत्र भ्रमण में हाटू उच्च पर्वतीय चरागाह तथा उसके आस-पास पाए जाने वाली हिमालयी जड़ी-बूटियों के बारे में अवगत करवाया जाएगा। एचएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेश शर्मा ने पॉवर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से संस्थान की गतिविधियों के बारे विस्तृत जानकारी दी। अरण्यपाल सत्य प्रकाश नेगी ने धन्यवाद सभी का किया।

Dainik Bhaskar

शिमला : हिमालय वन अनुसंधान संस्थान के सौजन्य से आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता करते प्रधान मुख्य आरण्यपाल अजय कुमार व उपस्थित अधिकारीगण

दिव्य हिमाचल Tue, 11 September 20
epaper.divyahimachal

शिमला में औषधीय पौधों के संरक्षण पर होगा मंथन

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

औषधीय पौधों के संरक्षण पर शिमला में मंथन शुरू हो गया है। औषधीय पौधों का संरक्षण एवं विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला से सोमवार से 14 सितंबर, 2018 तक एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में देश के 13 राज्यों के लगभग 25 वरिष्ठ वन अधिकारी भाग ले रहे हैं। औषधीय पौधों के क्षेत्र में कार्य कर रहे वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों व विषय विशेषज्ञों की ओर से औषधीय पौधों का वनों में संरक्षण, औषधीय पौधों को पौधशाला तैयार करना, क्षेत्र में पौधरोपण, क्रय-विक्रय तथा औषधीय पौधों की खेती से स्थानीय समुदाय, किसानों की आय में बढ़ोतरी आदि विषयों पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी अधिकारियों से अनुभव साझा किए जाएंगे। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने देश के विभिन्न प्रदेशों से आए भारतीय वन सेवा के अधिकारियों का अभिनंदन और स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो वन अधिकारियों के लिए उन्हें नए कौशल, विधियों और प्रक्रियों के बारे में परिचित कराने के उद्देश्य से सरकारी सेवाओं में उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक माना जाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए देश के भारतीय वन सेवा के अधिकारियों को नवीन तकनीकों के बारे में अवगत करवाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी कड़ी में औषधीय पौधे जिनका वर्तमान में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में एक विशेष स्थान है, पर वन अधिकारियों के लिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

■ हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से सात दिवसीय सेमिनार शुरू

एच.एफ.आर.आई. में जुटे 13 प्रदेशों के वन अधिकारी

शिमला, 10 सितम्बर (ब्यूरो): औषधीय पौधों के संरक्षण, विकास और इनसे होने वाले फायदों से स्थानीय समुदाय को जागरूक करने के उद्देश्य से शिमला में 5 दिवसीय कार्यशाला शुरू हुई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में चल रही इस कार्यशाला में 13 प्रदेशों के वन अधिकारी औषधीय पौधों को लेकर जानकारिया देंगे। कार्यशाला के पहले दिन कई वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा विषय विशेषज्ञों ने वनों के संरक्षण, पौधशाला तैयार करने, पौधारोपण करने, क्रय-विक्रय व औषधीय पौधों की खेती से स्थानीय समुदाय तथा किसानों को होने वाले फायदों की जानकारी दी गई। कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए प्रधान मुख्य अरण्यपाल हिमाचल वन विभाग अजय कुमार ने कहा कि भारत में औषधीय पौधों की जानकारी चिकित्सा के क्षेत्र में वैदिक काल से ही परंपरागत रूप से चली आ रही है। औषधीय फसलों का उपयोग विभिन्न बीमारियों के इलाज में होता है। इनकी खेती से किसानों द्वारा आर्थिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता है। विश्व की काफी आबादी अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक/हर्बल उत्पादों का उपयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि सौन्दर्य प्रसाधन तथा खाद्य पदार्थों में भी इनका उपयोग होता है। औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए इनकी व्यावसायिक खेती जरूरी हो गई है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम को जरूरी बताया। कार्यक्रम संयोजक डा. संदीप शर्मा ने कहा कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को हाटू उच्च पर्वतीय चारागाह तथा उसके आसपास पाए जाने वाली हिमालयी जड़ी-बूटियों के बारे में अवगत करवाया जाएगा, साथ ही वहां के स्थानीय वैद्यों एवं औषधीय पौधों के व्यवसाय में लगे हुए स्थानीय समुदाय के लोगों के साथ औषधीय पौधों के बारे में परिचर्चा का भी आयोजन किया जाएगा।

पंजाब केसरी ई-पेपर Tue, 11 September 2018
epaper.punjabkesari.in/c/32084651